द्वितीय अध्याय

अध्याय – द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की विषयगत दक्षता आवयश्कताओं से सम्बन्धित प्राप्त साहित्य एवं शोध कार्यों का विवरण निम्नलिखित है :–

रावुर (1959) : "धारवार जिले में प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय की अध्यापिकाओं की सामाजिक आर्थिक स्थिति व समस्याओं का अध्ययन किया ।" उन्होंने प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिकाओं के मध्य फैले हुए असंतोष की सामाजिक, आर्थिक स्थिति के संदर्भ में जानने का प्रयास किया, साथ ही अभिभावकों को अध्यापिकाओं की अकुशलता के कारण असंतुष्ट पाया । सारांश स्वरूप पाया गया कि 40.06 प्रतिशत अध्यापिकायें शिक्षण व्यवसाय के लिये उपयुक्त नहीं हैं केवल 30 प्रतिशत को कुछ अध्यापन क्षमता एवं लक्ष्य के प्रति उत्तरदायित्व की भावना है ।

उपासनी (1966) : "ने महाराष्ट्र राज्य के ग्रामीण शालाओं के शिक्षकों के वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का अध्ययन किया ।" इसके उद्देश्य वर्तमान में चल रहे शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम की कमियों और अच्छाइयों का पता आत्म मूल्यांकन विधियों द्वारा मालूम करना, अध्ययन के निष्कर्ष वर्तमान में आवश्यक योग्यता या प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्था में प्रवेश के लिए या शिक्षक चुनाव के लिए रखी गई है । और इसके स्तर को बढ़ाया जाना चाहिये, प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में स्थिति का मूल्यांकन वर्तमान स्थिति उद्देश्य प्राप्ति से काफी दूर थे ।

कोलमैन (1966) : ने अपने अध्ययन में बताया कि स्कूलों के बढ़ते हुये आधुनिकीकरण एवं उनकी प्रभावपूर्णता पर की गई शोध के कई ठोस साक्ष्य हैं, कि व्यक्तिगत रूप से विद्यार्थी के परिवेश की विशेषताएँ, एक बड़े अनुपात में, जो कि किसी भी विद्यार्थी के शैक्षणिक परिणामों से प्राप्त है न कि किसी विशेष विद्यालय में उपस्थिति देने से ।

मालवीय (1968) : इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य था, शिक्षक प्रशिक्षक कार्यक्रमों में आधुनिक चलन और म.प्र. में शिक्षक प्रशिक्षण को उजागर करना, इसके प्रमुख निष्कर्ष थे :–

1. पारम्परिक विधि और शोध निष्कर्ष में कोई खास विस्तार नहीं है ।
2. मूल्यांकन तकनीकी अक्सर नियमबद्ध होती है और बहुत अधिक असमानताएँ इसके बाह्य मूल्यांकन में दिखाई देती हैं ।
3. चूंकि म.प्र. एक कृषि प्रधान राज्य है, इसलिए ग्रामीण विकास के कुछ क्रियाकलाप शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम से जुड़ने चाहिये ।
4. शिक्षक का अच्छा समन्वय शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम को अधिक सफल बनाता है । राज्य के शिक्षक प्रशिक्षण में उपयुक्त पुस्तकालय सुनिश्चितीकरण होना चाहिये ।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

मामा (1980) : ने महाराष्ट्र प्रान्त के शिक्षकों पर अन्तः सेवाकालीन प्रशिक्षण का प्रभाव जानने के लिए अध्ययन किया ।

जिसके उद्देश्य महाराष्ट्र प्रान्त के लोगों को अन्तः सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए शिक्षक संख्या, माध्यम तथा विषयगत प्रशिक्षण की आवश्यकता का पता लगाना था ।

अन्तः सेवाकालीन प्रशिक्षण की आवधारणा के बारे में जानना, शिक्षकों में शैक्षणिक एवं मनोरंजनात्मक सामग्री पढ़ने की आदत का पता लगाना था । अध्ययन के परिणाम, अन्तः सेवाकालीन प्रशिक्षण को कम महत्त्व दिया जाता है, यह प्रशिक्षण ठोस कार्यक्रम के रूप में नही चलाये जाते थे, तथा चयन करने का तरीका गुण और योग्यता की श्रेष्ठता पर सही नहीं था ।

मजुमदार (1982) : ने "अन्तः सेवाकालीन कार्यक्रम के अंतर्गत नये विचारों, अभ्यास को माध्यमिक शिक्षण प्रशिक्षण कार्यक्रम में जोड़कर आवश्यकता पर आधारित कार्यक्रम का अध्ययन किया ।" अध्ययन के परिणाम यह रहे कि सफल अभ्यास केन्द्रित हो, आवश्यकताओं पर आधारित हो, तथा उद्देश्यों की प्राप्ति करता हो ।

गुडलैण्ड (1984) : ने कई शोध अध्ययन में इस बात को अधिक महत्त्व देते हैं जहाँ शैक्षणिक उपलब्धि की बात हो, शैक्षणिक उपलब्धि भी पढ़ने को कौशल तथा गणित व परीक्षा परिणाम इत्यादि के श्रेष्ठता की आवश्यकता हेतु संबंधित रहा ।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय (शिक्षा विभाग), भारत सरकार (1995) : ने दस्तावेजमें किये गये विचारों से कई सामान्य निष्कर्ष सामने आते हैं । सबसे पहला और महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि संगठन साधन और नीति संबंधी रुपरेखा कैसी भी क्यों न हो शिक्षा में सुधार, सफल और असफल, गुणात्मक होने का अन्तिम निर्णायक तत्त्व होता है–समाज की इसके प्रति प्रतिबद्धता और इसके क्रियान्वयन की प्रक्रिया से सम्बद्ध लोगों का लक्ष्य केन्द्रित होना, और उसके प्रति उनकी सम्पूर्ण निष्ठा । इन दोनों बातों को मानते हुए जो लोग पूरी तरह से सुनिश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति में लगे हुए हैं वे अपने परिवेश की सीमाओं से ऊपर उठकर अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं ।

एलेक्जेण्डर एवं अन्य (1992) : ने सुनिश्चित तौर पर विवेचन किया है एवं प्रभावी शिक्षण के घटक जैसे शिक्षक का विषय ज्ञान, सावधानीपूर्ण एवं चुनौतीपूर्ण सीखने के कार्य, ज्ञानात्मक रूप से जरूरी शिक्षक व छात्र सम्प्रेक्षण एवं प्रभावी व आर्थिक शैक्षणिक कक्षा संगठन महत्त्वपूर्ण है ।

सेमन्स एवं अन्य (1995) : ने प्रभावी शिक्षण के कुछ मुख्य लक्षण ज्ञात किये, जैसे–व्यावसायिक नेतृत्व, विभाजित दृष्टिकोण एवं लक्ष्य, सीखने का पर्यावरण, अधिगम की एकाग्रता, उद्देश्यपूर्ण शिक्षण, बौद्धिक चुनौतियाँ प्रदान कर उच्च आकांक्षा प्राप्त पुर्नबल, प्रशासनिक उन्नति (विद्यार्थी एवं शाला का कार्य निष्पादन), विद्यार्थियों के अधिकार एवं कर्त्तव्य जिसमें विद्यार्थी की गरिमा, घर एवं विद्यालय की भागीदारी एवं अधिगम संगठन है । प्रभावी शिक्षण के अभ्यास से शोधकर्त्ता ने अन्ततः

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

1. पाठ व कक्षा के प्रभावी संगठन, 2. उद्देश्य की स्पष्टता, 3. सुनियोजित पाठ, 4. ग्रहण करने के अभ्यास को प्रभावी शिक्षण का मुख्य घटक माना ।

राजपूत (1996) : ने निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रकाश डाला है–शिक्षा के स्वरूप में परिवर्तन, प्रशिक्षण का महत्त्व, प्रशिक्षण का गुणात्मक मनोवैज्ञानिक आधार, तकनीकी शिक्षा में प्रशिक्षण, शिक्षा के वर्तमान स्वरूप में प्रशिक्षण की अनिवार्यता, शैक्षिक प्रशिक्षण की गुणवत्ता बनाये रखने में सरकार की भूमिका, माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम ।

Regional Institute of Education
LIBRARY
Bhopal